www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

१५

वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

युग ऋषि की अमर वाणी

(भाग-१)

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI MAHENDRA SHARMA
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युग ऋषि परम पूज्य पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के निकट सान्निध्य में रहने का सौभाग्य मिला। पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से समय समय पर सुने अमृत कणों को व्यक्तिगत डायरी में लिखते रहे हैं। जिन विचारों ने हमारे मन एवं अंतःकरण को सर्वाधिक झकझोरा, जिनका निरंतर चिंतन, मनन करते रहे और जिनसे हमें आगे बढ़ने का मार्गदर्शन मिला, उन अमृत विचारों को इस पुस्तिका के माध्यम से आप तक पहुंचा रहे हैं।

दूरभाष : (०५६५)
४०४०१५/४०४०००

मूल्य : १.५० रु०

–लीलापत शर्मा
व्यवस्थापक
युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि, मथुरा–३

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छोटी शक्ति से ही कार्य आरंभ करें

यदि आपके पास मनचाही वस्तुऐं नहीं हैं, तो निराश होने की कुछ भी आवश्यकता नहीं । अपने पास जो टूटी फूटी चीजें हैं । उन्हीं की सहायता से अपनी कला को प्रदर्शित करना आरंभ कर दीजिए । जब चारों ओर घना अंधकार छाया हुआ होता है तो वह दीपक जिसमें छदाम की मिट्टी, आधे पैसे का तेल और दमड़ी की बत्ती है । कुल मिलाकर कुछ पैसे की भी पूंजी नहीं है चमकता है और अपने प्रकाश से लोगों के रुके हुए कार्यों को चालू कर देता है । जबकि हजारों पैसे मूल्य वाली वस्तुएं चुपचाप पड़ी रहती हैं । यह कुछ पैसे की पूंजी वाला दीपक प्रकाशवान होता है, अपनी महत्ता प्रकट करता है, लोगों का प्यारा बनता है, प्रदर्शित होता है और अपने अस्तित्व को धन्य बनाता है । क्या दीपक ने कभी ऐसा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रोना रोया है कि मेरे पास इतने मन तेल होता, इतने सेर रुई होती, इतना बड़ा मेरा आकार होता, तो ऐसा बड़ा प्रकाश करता। दीपक को कर्महीन नासमझों की भांति बेकार शेखचिल्लियों के से मनसूबे बांधने की फुरसत नहीं है। वह अपनी आज की परिस्थिति, हैसियत और औकात को देखता है। उसका आदर करता है और अपनी केवल मात्र कुछ पैसे की पूंजी से कार्य आरंभ कर देता है। उसका कार्य छोटा है बेशक, पर उस छोटेपन में भी सफलता का उतना ही महत्व है जितना कि सूर्य और चंद्र के चमकने की सफलता का है।

उचित को ही स्वीकार करिए

आपका कार्य केवल लोगों को प्रसन्न करना, केवल किन्हीं की आज्ञा पालन करना, किन्हीं के इशारों पर नाचना या किन्हीं का

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अंधभक्त बनना नहीं होना चाहिए । वरन् यह होना चाहिए कि उचित, आवश्यक, लाभदायक, धर्म संगत, विवेक युक्त ही कार्य को करेंगे । इन नीति को अपनाने के पश्चात् आमतौर से लोगों की नाराजी, निंदा, भर्त्सना, बुराई तथा विरोध का सामना करना पड़ता है । धर्ममय जीवन के मार्ग में प्रधान बाधा यही है, जिसने इस बाधा को तुच्छ समझकर ठुकरा दिया, वह आगे बढ़ जाता है । जो इस कागज के हाथों से डर गया उसको पश्चात्ताप और शोक में जलना पड़ता है ।

आप किसी बात को इसलिए स्वीकार मत कीजिए कि उसे बहुत लोग, बूढ़े लोग, धनी लोग कहते हैं । सत्य की कसौटी यह नहीं है कि उसे बहुत बूढ़े और धनी लोग कहते हैं । सत्य हमेशा उचित, आवश्यक, न्याययुक्त, तथ्यों से एवं ईमानदारी से भरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हुआ होता है । थोड़ी संख्या में, कम उम्र के गरीब आदमी भी यदि ऐसी बात को कहते हैं तो वह मान्य है । अकेला आपका आत्मा ही यदि सत्य की पुकार करता है, तो वह पुकार लाखों मूर्खों की बकझक से अधिक मूल्यवान है । जो उचित है वही ग्रहण करने योग्य है । वही स्वीकार करने योग्य है ।

हमारे वचन और कार्य सच्चे होने चाहिए

कोई मनुष्य मुंह से बढ़ चढ़ कर बातें करे और पेट में असत्यता छिपाए हुए हो तो वह बनावट अधिक देर तक ठहर नहीं सकती । आवाज में, शब्दों के उपयोग में, चेहरे में तथा शरीर की हलचल में सत्य और असत्य साफ दिखाई पड़ता है । झूठे आदमी की वाणी में सिटपिटाहट, चेहरे पर निस्तेजता होती है । आंखें मिलाते हुए वह झिझकता है । आशंका और भय से उसका मन अस्थिर एवं

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चिंतित सा दिखाई पड़ता है । असत्य बात कुछ ऐसी अस्वाभाविक होती है कि सुनने वाले के मन में अनायास ही अविश्वास के भाव उठने लगते हैं । इस सदी में झूंठ का बड़ा प्रचार है । बड़े कलात्मक ढंग से झूठ बोला जाता है तो भी उसे ऐसा नहीं बनाया जा सकता कि पकड़ में न आ सके ।

स्मरण रखिए झूठ आखिर झूठ है । वह आज नहीं तो कल जरूर खुल जाएगा । असत्य का जब भंडाफोड़ होता है तो उस मनुष्य की सारी प्रतिष्ठा नष्ट हो जाती है । उसे अविश्वासी, टुच्चा और ओछा आदमी समझा जाने लगता है । झूठ बोलने में तात्कालिक थोड़ा लाभ दिखाई पड़े, तो भी आप उसकी ओर ललचाइए मत क्योंकि उस थोड़े लाभ के बदले में अनेक गुनी हानि होने की संभावना है । आप अपने वचन और कार्यों द्वारा सचाई

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का परिचय दीजिए । सत्य उस बीज के समान है जो आज छोटा दीखता है पर अंत में फल–फूल कर महान वृक्ष बन जाता है । ऊंचा और प्रतिष्ठा युक्त जीवन बिताने के इच्छुकों का दृढ़ निश्चय होना चाहिए कि हमारे वचन और कार्य सच्चाई भरे हुए होंगे ।

अपनी शक्तियों को विकसित कीजिए

परमेश्वर ने सबको शक्तियां प्रदान की हैं । ऐसा नहीं है कि किसी में अधिक किसी में न्यून हों । किसी के साथ खास रियायत की गई हो । परमेश्वर के यहां अन्याय नहीं । समस्त अद्भुत शक्तियां तुम्हारे शरीर में विद्यमान हैं । तुम उन्हें जाग्रत करने का कष्ट नहीं करते । कितनी ही शक्तियों से कार्य न लेकर तुम उन्हें कुंठित कर डालते हो । अन्य व्यक्ति उसी शक्ति को किसी विशेष दिशा में मोड़कर उसे अधिक परिपुष्ट एवं विकसित

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर लेते हैं । अपनी शक्तियों को जाग्रत तथा विकसित कर लेना अथवा उन्हें शिथिल, पंगु, निश्चेष्ट बना डालना स्वयं तुम्हारे ही हाथ है । स्मरण रखिए संसार की प्रत्येक उत्तम वस्तु पर तुम्हारा जन्म सिद्ध अधिकार है । यदि तुम अपने मन की गुप्त महान सामर्थ्यों को जाग्रत कर लो और लक्ष्य की ओर प्रयत्न, उद्योग, उत्साहपूर्वक अग्रसर होना सीख लो तो जैसा चाहो आत्म निर्माण कर सकते हो । मनुष्य जिस वस्तु की आकांक्षा करता है उसके मन में जिन महत्वाकांक्षाओं का उदय होता है और जो जो आशापूर्ण तरंगें उदित होती हैं, वे अवश्य पूर्ण हो सकती हैं । यदि वह दृढ़ निश्चय द्वारा अपनी प्रतिज्ञा को जाग्रत कर ले ।

अतएव प्रतिज्ञा कर लीजिए कि आप चाहे जो कुछ हों जिस स्थिति, जिस वातावरण में

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हों, आप एक कार्य अवश्य करेंगे, वह यही कि अपनी शक्तियों को ऊंची से ऊंची बनाएंगे ।

कर्तव्य का पालन कीजिए

कर्तव्य वह कार्य है जिसे करना हम लोगों का धर्म है और जिसके न करने से हम लोग और लोगों की दृष्टि से गिर जाते हैं और अपने कुचरित्र से नीच बन जाते हैं ।

दृढ़ विश्वास रखो कि जब तुम्हारा मन किसी काम के करने से हिचकिचाए और दूर भागे तब कभी तुम उस कार्य को न करो । तुम्हें धर्मपालन करने में बहुधा कष्ट उठाना पड़ेगा, पर इससे तुम साहस न छोड़ो । क्या हुआ जो तुम्हारे पड़ोसी ठग विद्या और असत्यपरता से धनाढ्य हो गए और तुम कंगाल ही रह गए । क्या हुआ जो दूसरे लोगों ने झूठी चाटुकारी करके बड़ी बड़ी नौकरियां पा लीं और तुम्हें कुछ न मिला और क्या हुआ

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जो दूसरे नीच कर्म करके सुख भोगते हैं और तुम सदा कष्ट में रहते हो । तुम अपने कर्तव्य धर्म को कभी न छोड़ों और देखो इसमें कितना संतोष और आदर मिलता है ।

प्रलोभनों को देखकर मत फिसलो । पाप का आकर्षण आरंभ में बड़ा लुभावना प्रतीत होता है, पर वह अंत में धोखे की टट्टी सिद्ध होता है । जो इसके चंगुल में फंस गया उसे तरह तरह की शारीरिक और मानसिक यातनाएं सहनी पड़ती हैं । सावधान रहो । प्रलोभनों में न फंसो, चाहे कितनी ही कठिनाई का सामना करना पड़े, पर कर्तव्य पर दृढ़ रहो । कर्तव्य पर दृढ़ रहने वाले मनुष्य ही सच्चे मनुष्य कहलाने के अधिकारी हैं ।

आत्म सम्मान की रक्षा कीजिए

यदि आप आत्म प्रताड़ना करते हैं, अपने विषय में हीन भाव रखते हैं तो आप भावनाओं

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की बीमारी से ग्रस्त हैं । यह बीमारी आपको आपकी महत्ता का अनुभव नहीं होने देती । इससे मुक्ति का उपाय यह है कि आप कार्यों को, बिना भावना की परवाह किए संपन्न करते जाइए । यह नियम बना लीजिए कि अपने किए हुए किसी भी कार्य की बुराई न करेंगे । अपने विषय में उच्च और पवित्र धारणाएं बना लीजिए और उन्हें पुष्ट करते रहिए । कार्य करने से आपकी हीनता लुप्त होगी । अधिक सोचने से वह प्रखर होती है । सोचिए कम कार्य अधिक कीजिए । जो व्यक्ति अपनी अधिक टीका टिप्पणी करता है और गलतियां निकालता है वह आत्म विकास एवं परिष्कार रोक लेता है ।

आप अपने संतोष और उत्साह के लिए दूसरों पर निर्भर मत रहिए । दूसरों का अनुकरण न कीजिए । ऐसा करने से आपकी

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मौलिकता, गुण, विशेषता में प्रकट न होगी । वही कीजिए चाहे कोई कुछ भी कहे । आप स्वयं सोचिए कि क्या उत्तम है । आपकी विशेषताएं प्रकाश में आएंगी और लोग चमत्कृत होंगे ।

मानसिक दृष्टिकोण से बालक न बनिए । संसार की विभीषिकाओं, आपत्तियों और संघर्ष को सहन करने की आत्म शक्ति का निरंतर विकास करते रहिए ।

आशावादी बनें

हमारे किए कुछ न होगा ऐसा निराशावादी विचार सफलता का विघातक शत्रु होता है । आशावाद बहुत बड़ी उत्पादक शक्ति है । जीवन की जड़ है । इसके अंदर प्रत्येक वस्तु निवास करती है । वह मानसिक क्षेत्र में प्रविष्ट करते ही बड़ा लाभ पहुंचाती है । अतः जिसे ना उम्मीदी से छुटकारा पाने की आकांक्षा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हो उसे उचित है कि अपने मन की स्थिति को उत्पादक, उत्साहपूर्ण, उदार, प्रवर्द्धक और उदात्त रखें ।

तुम निराश इसलिए हो कि भय ने और संदेह ने तुम्हारे अंतःकरण पर अधिकार कर लिया है । तुम्हें अपनी योग्यता के प्रति अविश्वास हो गया है । तुम्हें सफलता और दुर्भाग्य की मानसिक प्रवृत्तियों ने परास्त कर दिया है और हीनत्व की भावना ने तुम्हारे मानसिक जगत में तूफान लाकर तुम्हें अस्त व्यस्त कर डाला है । विचारों की यह परवशता ही तुम्हें डूबो रही है ।

याद रखो जब तक तुम किसी कार्य में हाथ नहीं डालोगे तब तक अपनी शक्ति का अनुमान कदापि न कर पाओगे । मनुष्य जब तक अपने आपको यह न समझ ले कि वह कार्य करने की क्षमता रखता है तब तक वह

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पंगु ही बना रहेगा ।

तुम्हें जो कुछ करना श्रेष्ठ जंचता है, जो कुछ तुम्हारी अंतरात्मा कहती है, उसे दृढ़ संकल्पपूर्वक अवश्यमेव प्रारंभ करो । डरो नहीं, शंका संदेह या अविश्वास की कोई बात न सोचो बल्कि कार्य शुरू कर ही डालो । प्रत्येक मनुष्य कुछ न कुछ जरूर कर सकता है और करेगा यदि कर्मरत होकर हिम्मत न हारे । हिम्मत हमेशा बाजी मारती है ।

तुम अपने सामर्थ्य और निश्चय बलों की अभिवृद्धि करते रहो । संसार में जो करोड़ों मनुष्य निराश हो रहे हैं । उसका प्रधान कारण आत्मविश्वास की कमी है, श्रद्धा खो बैठे हैं और दूषित निष्प्रयोजन कल्पनाओं के ग्रास बने हैं । तुम इनसे सदैव बचे रहो । सदा सर्वदा आंतरिक मन की उन्नत भावनाओं के प्रति लक्ष्य किए रहो और अपनी समस्त शक्तियों में

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अखण्ड श्रद्धा और पूर्ण विश्वास रखो । किसी विशेष मर्यादा तक केवल ऊपरी विश्वास ही मत रखो परंतु भीतरी तह में भी, दृढ़ता से विश्वास की अमिट छाप जमा दो । फिर विश्वास के सुमधुर फल देखो । तुम्हारी सब निराशा रफूचक्कर हो जाएगी ।

आज से तुम अपनी क्षुद्रता का चिंतन छोड़ो । जब कभी विश्व की विशालता पर विचार करने बैठो तो अपने मन, शरीर, आत्मा की महान शक्तियों पर चित्त एकाग्र करो । शक्ति के इस केन्द्र पर मन स्थिर रखने से कोई दुर्बलता तुम्हारे अंतःकरण में प्रवेश नहीं कर सकती ।

मृत्यु और कष्ट अनिवार्य प्रक्रिया

अपने प्रिय जनों के वियोग से हम अधीर हो जाते हैं क्योंकि वह हमें छोड़कर चल दिया । इस विषय में अधीर होने से क्या काम

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चलेगा । क्या वह हमारी अधीरता को देखकर लौट आएगा । यदि नहीं, तो हमारा अधीर होना व्यर्थ है । फिर हमारे अधीर होने का कोई समुचित कारण भी तो नहीं । क्योंकि जिसने जन्म धारण किया है, उसे मरना तो एक दिन है ही । जो जन्मा है वह मरेगा भी । संपूर्ण सृष्टि के पितामह ब्रह्मा हैं । चराचर सृष्टि उन्हीं से उत्पन्न हुई है । अपनी आयु समाप्त होने पर वे भी नहीं रहते हैं क्योंकि वे भी भगवान विष्णु के नाभि कमल से उत्पन्न हुए हैं । अतः महाप्रलय में वे भी विष्णु के शरीर में अंतर्निहित हो जाते हैं ।

जब यह अटल सत्य है कि आगमान वस्तु का नाश होगा ही तो फिर तुम उस अपने प्रियजन का शोक क्यों करते हो । उसे तो मरना ही था, आज नहीं तो कल और कल नहीं तो परसों । सदा कोई जीवित रहा भी है

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जो वह रहता । जहां से आया था चला गया । एक दिन तुम्हें भी जाना है । जो दिन शेष हैं उन्हें धैर्य के साथ गुणागार के गुणों के चिंतन में बिताना ।

शरीरधारी कोई भी ऐसा नहीं है जिसने विपत्तियों के कडुवे फलों का स्वाद न चखा हो । सभी उन अवश्य प्राप्त होने वाले कर्मों के स्वाद से परिचित हैं, फिर हम अधीर क्यों हों ? हमारे अधीर होने से हमारे आश्रित भी दुखी होंगे, इसलिए हम धैर्य धारण करके क्यों नहीं उन्हें समझावें ? जो होना होगा हो जाएगा । बस विवेकी और अविवेकी में यही अंतर है । जरा, मृत्यु और व्याधियां दोनों को ही होती है किंतु विवेकी उन्हें अवश्यंभावी समझकर धैर्य के साथ सहन करता है और अज्ञानी विकल होकर विपत्तियों को और बढ़ा लेता है । महात्मा कबीर ने इस विषय पर कहा है–

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ज्ञानी काटे ज्ञान से, अज्ञानी काटे रोय ।
मौत, बुढ़ापा, आपदा, सब काहु को होय ॥

जो धैर्य का आश्रय नहीं लेते वे दीन हो जाते हैं, परमुखापेक्षी बन जाते हैं । इस से वे और भी दुखी होते हैं । संसार में परमुखापेक्षी बनना दूसरे के सामने जाकर गिड़गिडाना दूसरे से किसी प्रकार की आशा करना इससे बढ़कर दूसरा कष्ट और कोई नहीं है । इसलिए विपत्ति आने पर धैर्य धारण किए रहिए और विपत्ति के कारणों को दूर करने एवं सुविधा प्राप्त करने के प्रयत्न में लग जाइए । जितनी शक्ति अधीर होकर दुखी होने में खर्च होती है इससे आधी शक्ति भी प्रयत्न करने में लगाई जाए तो हमारी अधिकांश कठिनाइयों के निवारण का हल निकल सकता है ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जीवन क्या है ?

खाना, पीना, पचाना, सांस लेना आदि शरीर में नित्य होने वाले काम मात्र ही क्या जीवन है अथवा क्या धन संपत्ति या नाम, यश की प्राप्ति के लिए तरकीबों और उपायों का सोचना मात्र ही जीवन है अथवा क्या सृष्टि की परंपरा को चलाने के लिए संतानोत्पत्ति करना ही जीवन है।

जीवन दो प्रकार का होता है । एक तो भौतिक तथा दूसरा आध्यात्मिक । वैज्ञानिकों का कथन है कि विचारना, जानना, इच्छा करना, भोजन करना और उसका परिपाक करना, सांस लेना इत्यादि जो कार्य है वही जीवन है । परंतु यह जीवन अमर नहीं होता । ऐसा जीवन दुख–सुख, चिंता–आपत्ति, विपत्ति, पाप, बुढ़ापा, रोग इत्यादि का आखेट बना रहता है ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्राचीन महर्षियों, योगियों और तपस्वियों ने अपनी आत्मा को पहिचान कर निश्चयपूर्वक कहा है कि जो आत्मा में रत है केवल वही स्थाई और असीम आनंद एवं अमरतत्व प्राप्त कर सकता है । गुरु वचनों, शास्त्रों में जिन लोगों की अटूट श्रद्धा है वे आध्यात्मिक और सत्य के मार्ग पर निर्भीक विचरते हैं और स्वतंत्रता, पूर्णता या मोक्ष प्राप्त करते हैं । वे सच्चिदानंद ब्रह्म में या अपने ही स्वरूप में स्थिर रहते हैं । यही मानव जीवन का ध्येय एवं परम उद्देश्य है । यही अंतिम लक्ष्य है । आत्म साक्षात्कार के लिए प्रयत्न करना ही मनुष्य का परम कर्तव्य है ।

जीवन संग्राम में विजयी हों

अपने आदर्श और लक्ष्य तक पहुंचने के लिए संग्राम करते रहना ही जिंदगी है । इस संग्राम में विजय प्राप्त करना ही जीवन है ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनेक प्रकार की जागृतियों को ही जीवन कहते हैं । मन और इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करिए, ये ही आपके असली शत्रु है । अपनी बाह्य और आंतरिक प्रकृति पर विजय प्राप्त करिए । अपनी पुरानी बुरी आदतों तथा कुविचारों को कुसंस्कारों और कुव्यसनों को अवश्य जीतना होगा । इन पैशाचिक शक्तियों से युद्ध करना होगा, विजय प्राप्त करनी होगी । अधःपतन की ओर ले जाने वाली वासनाओं पर पूर्ण नियंत्रण रखना होगा । आपका जन्म ही आत्म साक्षात्कार करने के लिए हुआ है । सकाम कर्म के द्वारा अपने मन और बुद्धि को शुद्ध करिए । इन्द्रिय निग्रह से अपने ही स्वरूप में स्थिर होइए ।

जीवन संग्राम में जब आप पर प्रतिदिन चोटें पड़ती हैं जब आप धक्के खाते हैं । तभी मन आध्यात्मिक पथ की ओर ठीक झुकता है

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और तब सांसारिक विषयों से अन्यमनस्कता उत्पन्न होती है और अरुचि होती है । इस प्रपंच से उद्धार पाने की उत्कंठा जागृत होती है । विवेक और वैराग्य होता है । अतएव गंभीर धारणा और ध्यान में लग जाइए ।

आध्यात्मिक जीवन जिएं

आध्यात्मिक जीवन निरा गल्प नहीं है । केवल आवेश मात्र नहीं है । यही सच्चा आत्मस्वरूप जीवन है । यह विशुद्ध आनंद और सुख का अनुपम अनुभव है । इसी को पूर्णता प्राप्त जीवन कहते हैं । क्या आप अक्षय आनंद और परमसुख के अमरपद की प्राप्ति के लिए लालायित नहीं हैं ? यदि हैं तो आइए अपनेपन और इन्द्रियों पर संयम रखिए, सद्गुणों को सीखिए । आत्मा के सच्चे स्वरूप को जानने की चेष्टा करिए तभी आप उस अतीव गंभीर, असीम आनंद एवं अमरत्व को

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पा सकोगे । केवल तभी आप अमरपद तक पहुंच सकोगे ।

इस शरीर को ही आत्मा समझ लेना सबसे बड़ा पाप है । इस भ्रमात्मक भाव को त्याग दीजिए । सांसारिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए उपाय करना, तरकीबों का सोचना, विचारना, झूठे मनसूबे बांधना, ख्याली पुलाव बनाना छोड़िए, चिरपालित मायाविनी आशाओं को तिलांजलि दीजिए । वासनाओं इच्छाओं का दमन कर उनसे ऊपर उठिए । बुद्धि से काम लीजिए । उपनिषद शास्त्रों का सद्विचारों का मननपूर्वक अध्ययन करिए । नियमित रूप से नित्य निदिध्यासन करिए ।

सुख दुख मनःस्थिति पर निर्भर

जैसे हम हैं वैसा ही हमारा संसार होगा । यदि हम सुखी हैं तो हमारा सारा संसार सुखी है और यदि हम दुखी हैं तो हमें सारा संसार

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चाहे वह कितना ही सुखमय क्यों न हो, दुखमय ही प्रतीत होता है ।

यह सब हमारी मनोदशा पर ही अवलंबित रहता है । यदि हम दुख में भी सुख अनुभव करने लगें तथा सोचने लगें कि यह सब हमें केवल अपने जीवन स्तर की सीढ़ियों पर चढ़ने के हेतु परीक्षार्थ ही मिला करता है तो हमें दुख की छाया भी नहीं छू सकेगी । जब हम इस प्रकार का अनुभव करने लगेंगे तो वास्तव में हम दुख को सुख में बदल सकेंगे और अध्यात्म तत्व की ओर अग्रसर हो कर दूसरे के दुख को भी सुखों में बदल सकेंगे ।

ऐसा करने के लिए हमें त्याग व तपस्या की आवश्यकता पड़ती है जिसकी प्रतिक्रिया हमारी आत्मा पर होती है । यदि हमारी आत्मा इन सबको सहन कर लेती है तो वास्तव में

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हम में एक आध्यात्मिक शक्ति का विकास होता है । जिसका निर्माण हम अपने विचारों द्वारा ही करते हैं । आज हम जिस परिस्थिति में भी क्यों न हों अपने दृष्टिकोण को बदल देना चाहिए तथा अपने विचारों को सदा प्रसन्नता, आशा, शांति, शक्ति और प्रयत्न की ओर ले जाना चाहिए । जिस समय आप ऐसा करने लगेंगे तो देखेंगे कि आपका जीवन सहसा प्रसन्नता, शांति, शक्ति आदि गुणों से विभूषित होता हुआ नजर आएगा ।

परिस्थितियों के निर्माता स्वयं हम

यदि आज भी आप बुरी परिस्थितियों तथा वातावरण में जकड़े हुए हैं, तो निराश मत होइए, अपने भाग्य को मत कोसिए, इस परिस्थिति के लिए किसी दूसरे को दोषी मत ठहराइए, सिर्फ अपना दृष्टिकोण बदल दें । बुराई का कारण तो आप में ही विद्यमान है ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसे समझ कर अपने आपको खुशी खुशी घटनास्थल पर घटना को सामने आने दीजिए । यह घटना आपकी स्वतः की निर्मित की हुई है । उसे आप शीघ्र दूर कर सकते हैं । यदि आप अपना दृष्टिकोण बदल दें । सदा उत्तम विचारों में लीन रहें । अपनी आंतरिक स्थिति को सुधारने का दृढ़ संकल्प कर लें तो बाह्य जीवन में भी वह दशा सफलतापूर्वक प्राप्त कर सकते हैं जिसके लिए आप चिंतित रहते हैं ।

यदि हम क्रोध, चिंता, ईर्ष्या, लोभ आदि असंगत मानसिक दोषों के शिकार होते हुए भी उन्नति पूर्ण स्वस्थ जीवन की कल्पना करते हैं तो यह असंभव बात का स्वप्न देखना है । यदि हम वस्तुतः अपने जीवन को सुखी एवं उन्नतिशील देखना चाहते हैं तो क्रोध, चिंता, ईर्ष्या आदि विचारों को घटाने और हटाने के

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिए प्रयत्न करना होगा ।

सुख-मनोदशा पर निर्भर

आप जीवन के प्रति अपनी धारणा बदल डालिए । विश्वास तथा ज्ञान से ही अपना जीवन भवन निर्माण कीजिए । यदि वर्तमान आपत्तिग्रस्त है तो उसका यह अर्थ नहीं है कि भविष्य भी अंधकारमय है । आपका भविष्य उज्जवल है । विचारपूर्वक देखिए कि जो कुछ आपके पास है उसका सबसे अच्छा उपयोग कर रहे हैं अथवा नहीं ? क्योंकि यदि प्रस्तुत साधनों का दुरुपयोग करते हैं तो चाहे वह कितने ही तुच्छ और सारहीन क्यों न हों आप उसके भी अधिकारी न रहेंगे । वह भी आपसे दूर भाग जाएंगे या छीन लिए जाएंगे ।

यह सत्य है कि जब तक आप स्वतः अपनी दशा नहीं सुधारें तब तक दुख शोक तथा चिंताएं पीछा नहीं छोड़ सकतीं और

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परिणामस्वरूप आप सदा दुखी रह सकते हैं । इसलिए अपनी आंतरिक दशा सुधारिए । आंतरिक जीवन के साथ बाह्य जीवन में परिवर्तन होना निश्चित है । जिसकी मनोदशा उत्तम है वह स्वल्प साधन होने पर भी सदा सुखमय वातावरण में विचरण करेगा ।

सोद्देश्य जीवन जिएं

जीवन को असफलता में नष्ट न करके यदि उसे सफल बनाना है तो उसका एक मात्र उपाय साधक बनना ही है । जीवन की साधना यही है कि अपने को तथा दूसरों को नाना प्रकार के दुख देने वाले जो तीन महा असुर हैं उन अज्ञान, अशक्ति और अभाव को दूर करने के लिए द्विजत्व का व्रत लें । द्विजत्व का तात्पर्य है–ज्ञान, बल और संपत्ति का अभिवर्धन । यह अपने लिए ही नहीं वरन् सभी के लिए बढ़ाने योग्य हैं । कोई व्यक्ति,

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

राष्ट्र या समाज इन तीनों के द्वारा ही सुखी हो सकता है । जहां इन तीनों की कमी होगी वहां उसी अनुपात से कष्ट और दुख उपस्थित रहेंगे ।

जीवन अस्तव्यस्त जीने के लिए, तुच्छ और क्षुद्र कार्यों में व्यतीत करने के लिए नहीं है । यह महान संपदा उन्हीं महान उद्देश्यों की पूर्ति के लिए खर्च की जानी चाहिए जो व्यापक रूप से सुख शांति की वर्षा करने वाले हैं । हमारा लक्ष्य द्विजत्व की प्राप्ति एवं कर्तव्य धर्म की पूर्ति होना चाहिए । यह कार्य छछोरापन, उथलेपन तथा संकीर्ण दृष्टिकोण रखकर नहीं हो सकता । इसे पूरा करने के लिए साधनात्मक दृष्टि और कार्य पद्धति होनी चाहिए । हमारा जीवन साधनामय होना चाहिए क्योंकि मानव जन्म की सफलता साधनात्मक गतिविधि पर ही निर्भर है ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसलिए हमारा प्रथम कर्तव्य यह है कि निरुद्देश्य दिन पूरे न करते रहकर जीवन का कोई निश्चित लक्ष्य निर्धारित करें और जो लक्ष्य निर्धारित हो जाए उसे पूरा करने के लिए दृढ़ता एवं तत्परतापूर्वक जुट जाएं । निश्चित लक्ष की ओर दृढ़तापूर्वक जो प्रवृत्ति होती है उसे ही साधना कहते हैं ।

अपने को बुराइयों से बचाइए

आत्मानुसंधान तथा अंतरावलोकन द्वारा अपने दोषों को दूर करने की चेष्टा करो । यही सच्ची साधना है और कठिन होने पर भी अपना सर्वस्व देकर भी इसे प्राप्त करना होगा ।

अभिमान, चालाकी, कुटिलता, दंभ, संकीर्ण हृदयता, झगड़ालूपन, अपनी झूठी प्रशंसा, अपने आपको बहुत बड़ा समझना, दूसरों की निंदा करना, दूसरों की बड़ाई की बातों को भी छोटा करके कहना ये सब पुराने

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संस्कार अभी आपके मन में छिपे रह सकते हैं। जब तक आप इनको बिल्कुल दूर नहीं कर लेते तब तक आपका विकास नहीं हो सकता। अपरा प्रकृति के इन अवांछनीय दुर्गुणों को जब तक आप निर्मूल नहीं कर देते तब तक ध्यान योग में सफलता प्राप्त करना संभव नहीं है।

जो मनुष्य व्यर्थ के वादविवाद में बिना जरूरत पड़े रहते हैं उन्हें आध्यात्मिक मार्ग में उन्नति की कणमात्र भी आशा नहीं करनी चाहिए। साधकों को वादविवाद बिल्कुल छोड़ देना चाहिए। उन्हें वादविवाद करने की वृत्तियों को ध्यानपूर्वक आत्मनिरीक्षण द्वारा नष्ट कर देना है।

बिना विचारे कोई बात न कहो। एक शब्द भी व्यर्थ नहीं बोलो। सब प्रकार की बातचीत जिसकी आवश्यकता नहीं है, छोड़ दो, मौन रहो। अपने कर्तव्य की ओर विशेष

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ध्यान दो । अधिकारों की बात राजसिक अहंकार से पैदा होती है । वे अधिकार निरर्थक हैं । इनके लिए झगड़ने में समय और शक्ति को खोना है । अपने जन्म सिद्ध अधिकार, ईश्वर ज्ञान को प्राप्त करो तभी आप त्यागी मनुष्य होंगे ।

सुनियोजित जीवन-सफलता का मार्ग

किसी भी कार्य में यथेष्ठ सफलता प्राप्त करने के लिए उसका भलीभांति विचार करके, उसके हर अंगों से यथार्थ रूप से अवगत होना अत्यंत आवश्यक है । उसके सब अंगों का अत्यंत सूक्ष्म अन्वेषण करके अपने हानि लाभ, मार्ग की कठिनाइयां, दूसरों द्वारा उत्पन्न व्यर्थ का विरोध, अपनी शक्ति, साधन, योग्यता तथा कार्य की रूपरेखा और क्रम आदि पर भलीभांति गंभीरतापूर्वक विचार करके कार्य आरंभ करना चाहिए ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह निश्चित है कि यदि अपने कर्तव्यों को गंभीर विचारपूर्वक एवं निश्चित क्रियापद्धति द्वारा किया जाए तो असफलता की संभावना कम हो जाएगी । सामान्यतया असफलता तब ही होती है जब अपने कर्तव्यों को सजगतापूर्वक विचार और व्यवस्थापूर्वक नहीं किया जाता है ।

हम किसी भी महापुरुष को लें सबके जीवन में योजनाओं का सुंदर सामंजस्य मिलता है । बिना ठीक योजनाओं के वे कभी अपने जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते थे । यदि हमें भी सफलता प्राप्त करना हैं चाहे वह व्यापार कारीगरी या कोई भी कार्य हो तो हमें अपने महान उद्देश्य के अंतर्गत ठोस योजनाएं निर्मित करके कार्य आरंभ करना और उन्हें सफल बनाना चाहिए । जीवन में यथार्थ सफलता सुख और शांति प्राप्त करने का यही ठोस मार्ग और उपाय है । ◉

मुद्रक : युग निर्माण प्रेस, मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अधिक जानकारी के लिए आज ही स्वाध्याय का क्रम बनाकर आचरण करने के प्रयास में जुट जाएं ।

१.	प्रज्ञावतार हमारे गुरुदेव	२१.००
२.	मानव जीवन का उद्देश्य और सदुपयोग	४.००
३.	जीवन देवता की साधना-आराधना	२.५०
४.	सफलता के सात सूत्र साधन	३.५०
५.	प्रगति की, प्रसन्नता की जड़ें अपने ही भीतर	४.००
		३५.००

विस्तृत सूचीपत्र निःशुल्क मंगाने के लिए स्थानीय युग साहित्य प्रचार केन्द्र अथवा युग निर्माण योजना, मथुरा-३ से सम्पर्क करें ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मीय अनुरोध

इस पुस्तिका को अधिकाधिक व्यक्तियों तक पहुँचाने एवं पढ़ाने का प्रयास करें । इसे नववर्ष, दीपावली, होली आदि पर्वों पर तथा विवाह, जन्मदिन आदि मांगलिक अवसरों पर उपहार के रूप में देने के लिए अपने पास समुचित संख्या में मंगा कर रख लें । अन्य मंहगे व निरर्थक उपहारों की तुलना में यह छोटा सा सस्ता उपहार लाख गुना महत्वपूर्ण एवं प्रेरणाप्रद सिद्ध होगा ।

अपने सम्बंधियों एवं सम्पर्क क्षेत्र के सभी व्यक्तियों को भी अधिकाधिक संख्या में यह पुस्तिका मंगाने के लिए प्रोत्साहित करें ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org